बाझ भरिया बान्हीअ से, मन का बाझ पवई

बाझ भरिया बान्हीअ ते

थलु : बाझ भरिया बान्हीअ से, मन का बाझ पवई,
मन का बाझ पवई, शाल सदा शाही वसई।

1. संगु न सियापो साहियां, अजलऊं गोलड़ी आहियां,
पांदु गिचीअ गलि पायां, मन को रहिमु पवई। .....

2. दोह कया थमि भारी, तोबह तो दरि जारो,
नेण वहनि था जारी, मन को तरिसु पवई।.....

3. दर्द हिजिर जो टारियो, वाग वसुल जी वारियां,
गणितियुनि आहे गारियो, मन को क्यासु पवई। .....

4. "कोझी" तोड़े कारी, लालण तुंहिंजे लाड़ी,
साजन करि सरदारी, मन का महिर पवई। .....

***

www.laigodriwala.com